

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 26-12-2025

विषय सूची

- » दहेज़: एक अंतर-सांस्कृतिक बुराई – सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय
- » सुशासन दिवस
- » भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) के 100 वर्ष
- » भारत की क्रिएटर इकाँनमी 2030 तक उपभोक्ता व्यय को 1 ट्रिलियन डॉलर से अधिक तक पहुँचाने के लिए तैयार है: रिपोर्ट
- » “प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY): 25वीं वर्षगांठ का उत्सव
- » भारत का विनिर्माण क्षेत्र

संक्षिप्त समाचार

- » भारतीय संविधान संथाली भाषा में जारी
- » धनु यात्रा
- » राष्ट्रीय खुफिया ग्रिड (NATGRID) को राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (NPR) से जोड़ा गया
- » रेबीज
- » भारत के घरेलू विमानन बाज़ार में नए प्रवेशकर्ता
- » ‘समुद्र प्रताप’

दहेज़: एक अंतर-सांस्कृतिक बुराई – सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

संदर्भ

- सर्वोच्च न्यायालय ने दहेज को एक अंतर-सांस्कृतिक सामाजिक बुराई बताया है, जो धर्म और समुदायों से परे है।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

- न्यायालय की टिप्पणियाँ :**
 - दहेज निषेध अधिनियम, 1961 के बावजूद यह प्रथा “उपहार” जैसे छव्व रूपों में जारी है।
 - दहेज न्याय, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों का उल्लंघन करता है और सीधे अनुच्छेद 14 (कानून के समक्ष समानता) को कमजोर करता है।
 - दहेज महिलाओं को विवाह में समान भागीदार के बजाय आर्थिक शोषण का साधन मानता है।
- न्यायालय के निर्देश :**
 - शैक्षिक पाठ्यक्रम सुधार हेतु निर्देश दिए गए ताकि पति-पत्नी की समानता को सुदृढ़ किया जा सके।
 - दहेज निषेध अधिकारियों की नियुक्ति, पुलिस/न्यायपालिका का संवेदनशीलकरण और मामलों का शीघ्र निपटारा सुनिश्चित करने का आदेश दिया।
 - उच्च न्यायालयों से लंबित दहेज मामलों की संख्या का आकलन कर उनके शीघ्र निपटारे के लिए कदम उठाने का अनुरोध किया।

दहेज प्रणाली

- दहेज का अर्थ है विवाह की शर्त के रूप में वधू के परिवार द्वारा नकद, संपत्ति या आभूषण जैसी मूल्यवान वस्तुएँ देना।
 - ऐतिहासिक रूप से यह स्त्रीधन (महिला की सुरक्षा हेतु स्वैच्छिक उपहार) से जुड़ा था, लेकिन समय के साथ यह एक जबरन और शोषणकारी सामाजिक प्रथा बन गया।
- औपनिवेशिक प्रभाव :** 1793 में लॉर्ड कॉर्नवालिस की नीतियों ने भूमि स्वामित्व का निजीकरण किया, जिससे महिलाओं को संपत्ति से वंचित किया गया।

- इसके परिणामस्वरूप परिवारों ने बेटियों के भविष्य की सुरक्षा हेतु दहेज देना शुरू किया, जो बाद में विवाह की अनिवार्य शर्त बन गया।

भारत में दहेज मामले

- राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के अनुसार, 2023 में दहेज-संबंधी अपराधों के मामलों में 14% वृद्धि हुई, और वर्षभर में 6,100 से अधिक मृत्युएँ दर्ज की गईं।
- उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक मामले दर्ज हुए, इसके बाद बिहार और कर्नाटक का स्थान रहा।
 - सबसे अधिक मृत्युएँ उत्तर प्रदेश में हुईं, इसके बाद बिहार रहा।
- 13 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों जैसे पश्चिम बंगाल, गोवा, अरुणाचल प्रदेश, लद्दाख और सिक्किम ने वर्षभर में शून्य दहेज मामले दर्ज किए।

भारत में दहेज प्रणाली के कारण

- पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना, जिसमें महिलाओं को आश्रित माना जाता है और पुत्रों को पुत्रियों से अधिक महत्व दिया जाता है।
- शिक्षा, रोजगार और उत्तराधिकार में लैंगिक असमानता, जिससे विवाह महिलाओं की सुरक्षा का मुख्य साधन बन जाता है।
- सामाजिक प्रतिष्ठा एवं मान-सम्मान का दबाव, जहाँ दहेज और भव्य विवाह सम्मान के प्रतीक बन जाते हैं।
- विवाह का व्यावसायीकरण, जिससे यह सामाजिक संस्था के बजाय आर्थिक लेन-देन बन गया।
- कानूनों का कमजोर प्रवर्तन और सामाजिक स्वीकृति, जिसके कारण कानूनी निषेध के बावजूद यह प्रथा जारी है।

चिंताएँ

- दहेज महिलाओं को वस्तु बना देता है और समानता व न्याय जैसे संवैधानिक मूल्यों को कमजोर करता है।
- घरेलू हिंसा और दहेज मृत्यु:** उत्पीड़न, क्रूरता, वधू-दहन और आत्महत्याएँ गंभीर चिंताएँ बनी हुई हैं।

- लैंगिक असंतुलन:** पुत्र-प्राथमिकता दहेज से और मजबूत होती है, जिससे भ्रूण हत्या और घटता लिंग अनुपात बढ़ता है।
- आर्थिक भार:** भारी दहेज माँगें गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों को ऋण और गरीबी में धकेल देती हैं।
- पितृसत्ता का स्थायीकरण:** विवाह और समाज में पुरुष प्रभुत्व और महिलाओं की अधीनता को सुदृढ़ करता है।
- सामाजिक विकास को कमजोर करना:** भ्रष्टाचार, उपभोक्तावाद और असमानता को सामान्य बनाता है, जिससे नैतिक एवं सामाजिक नींव कमजोर होती है।

सरकारी पहल

- दहेज निषेध अधिनियम, 1961:** दहेज देना, लेना या माँगना अपराध है।
 - दहेज उत्पीड़न भारतीय न्याय संहिता (BNS) और घरेलू हिंसा से संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत दंडनीय है।
 - यदि विवाह के सात वर्षों के अंदर महिला की अस्वाभाविक मृत्यु दहेज उत्पीड़न से होती है, तो इसे दहेज मृत्यु माना जाता है और कठोर कानूनी परिणाम होते हैं।
 - दहेज निषेध अधिकारी, पुलिस और NGOs शिकायतों का निपटारा करते हैं, और जागरूकता कार्यक्रम दहेज प्रथा को हतोत्साहित करते हैं।
- घरेलू हिंसा से संरक्षण अधिनियम, 2005:** धारा 3 इसे किसी भी ऐसे कृत्य के रूप में परिभाषित करती है जो महिला के शारीरिक/मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाए या उसकी सुरक्षा को खतरे में डाले, जिसमें अवैध माँगों के लिए उत्पीड़न भी शामिल है।
- 24x7 महिला हेल्पलाइन (181):** यह हेल्पलाइन महिलाओं को सार्वजनिक और निजी स्थानों पर हिंसा का सामना करने पर आपातकालीन एवं सहयोग सेवाएँ प्रदान करती है।
- बन स्टॉप सेंटर (OSCs):** ये केंद्र चिकित्सा सहायता, कानूनी सहायता, मनोवैज्ञानिक परामर्श और अस्थायी आश्रय एक ही स्थान पर उपलब्ध कराते हैं।

- महिला हेल्प डेस्क (WHDs):** पुलिस थानों में स्थापित किए गए हैं ताकि महिलाओं की समस्याओं के प्रति कानून प्रवर्तन अधिक सुलभ और संवेदनशील हो।
 - कुल 14,658 महिला हेल्प डेस्क स्थापित किए गए हैं, जिनमें से 13,743 महिला पुलिस अधिकारियों द्वारा संचालित हैं।

आगे की राह

- दहेज उन्मूलन के लिए बहुआयामी हस्तक्षेप आवश्यक है: महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को बेहतर करना, उत्तराधिकार कानूनों में सुधार कर वास्तविक संपत्ति अधिकार सुनिश्चित करना, लड़कियों के लिए अनिवार्य विद्यालयी नामांकन और व्यावसायिक प्रशिक्षण लागू करना।
- भारत सरकार ने महिलाओं की सुरक्षा और संरक्षा को बढ़ाने हेतु कानूनी उपायों, वित्तीय प्रावधानों एवं सहयोग सेवाओं के माध्यम से महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

Source: TH

सुशासन दिवस

संदर्भ

- सुशासन दिवस प्रत्येक वर्ष 25 दिसंबर को पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

सुशासन दिवस के बारे में

- संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, सुशासन सहभागी, सहमति-उन्मुख, जवाबदेह, पारदर्शी, उत्तरदायी, प्रभावी एवं दक्ष, न्यायसंगत और समावेशी होता है तथा विधि के शासन का पालन करता है।
- 2014 में सरकार ने घोषणा की कि 25 दिसंबर को सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

सुशासन सूचकांक

- सुशासन सूचकांक (GGI) एक निदान उपकरण है जिसे प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग (DARPG) द्वारा 25 दिसंबर, 2019 को राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में शासन प्रदर्शन का मूल्यांकन करने तथा सुधार को प्रोत्साहित करने हेतु प्रस्तुत किया गया।

- यह सूचकांक 10 प्रमुख क्षेत्रों की पहचान करता है और 58 नागरिक-केंद्रित संकेतकों के माध्यम से शासन प्रदर्शन का आकलन करता है।



सुशासन के लिए सरकारी पहल

- गवर्नर्मेंट ई-मार्केटप्लेस (GeM):** विभिन्न सरकारी विभागों/संगठनों/पीएसयू द्वारा आवश्यक सामान्य उपयोग की वस्तुओं और सेवाओं की ऑनलाइन खरीद को सुगम बनाता है। GeM का उद्देश्य सार्वजनिक खरीद में पारदर्शिता, दक्षता एवं गति को बढ़ाना है।
- UMANG ऐप:** इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय तथा राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस प्रभाग द्वारा विकसित, यह ऐप नागरिकों को एक ही मोबाइल प्लेटफॉर्म पर पूरे भारत की सरकारी सेवाओं तक पहुँच प्रदान करता है।
- केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण और निगरानी प्रणाली (CPGRAMS):** यह 24×7 ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जो समयबद्ध शिकायत निवारण और निगरानी हेतु डैशबोर्ड प्रदान करता है, जिससे सेवा वितरण में पारदर्शिता एवं जवाबदेही बढ़ती है।
- ई-एचआरएमएस 2.0 मोबाइल एप्लिकेशन:** एंड्रॉइड और iOS पर उपलब्ध यह ऐप सरकारी कर्मचारियों को मानव संसाधन सेवाओं तक सहज पहुँच प्रदान करता है।

सुशासन की चुनौतियाँ

- कानूनों का अप्रभावी कार्यान्वयन:** जल्दबाजी और अप्रभावी कार्यान्वयन से आम जनता को कठिनाई होती है तथा सरकार पर विश्वास कम होता है।

- भ्रष्टाचार:** अपारदर्शी प्रशासनिक संरचनाएँ, कमजोर कानूनी ढाँचे, सीमित सूचना तक पहुँच और अधिकारों की कमजोर समझ भ्रष्टाचार को बनाए रखते हैं।
- राजनीति का अपराधीकरण:** आपराधिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति जब विधायिका में आते हैं तो वे जनकल्याण के बजाय निजी हितों को प्राथमिकता देते हैं, जिससे प्रशासनिक अक्षमता और जनविश्वास का हास होता है।
- अधिकारों और कर्तव्यों की कम जागरूकता:** सीमित नागरिक जागरूकता से नागरिक अपने अधिकारों का दावा और कर्तव्यों का पालन नहीं कर पाते, जिससे स्वतंत्रताओं का दुरुपयोग, कमजोर भागीदारी एवं अप्रभावी शासन होता है।

आगे की राह

- शासन सुधारों को शिकायत निवारण और सेवा वितरण प्रणालियों को अधिक उत्तरदायी बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जिसके लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म, वास्तविक समय निगरानी एवं डेटा-आधारित निर्णय-निर्माण का पूर्ण उपयोग किया जाए।
- साथ ही संस्थागत क्षमता को सुदृढ़ करने, नागरिक जागरूकता को बढ़ावा देने और सिद्ध सर्वोत्तम प्रथाओं को व्यापक स्तर पर लागू करने के प्रयास आवश्यक हैं ताकि शासन में सुधार स्थायी और ज़मीनी परिणामों में परिवर्तित हो सके।

अटल बिहारी वाजपेयी के बारे में

- उनका जन्म 25 दिसंबर, 1924 को ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ।
- राजनीति में प्रारंभिक भागीदारी:** छात्र जीवन के दौरान 1942 में भारत छोड़े आंदोलन में शामिल हुए।
- प्रधानमंत्री पद के कार्यकाल:** वे तीन बार भारत के प्रधानमंत्री बने — 1996 में संक्षिप्त अवधि के लिए, 1998-1999 में 13 महीने के लिए, और 1999 से 2004 तक पूर्णकालिक।
 - वे पहले गैर-कांग्रेस नेता बने जिन्होंने प्रधानमंत्री के रूप में पूर्ण कार्यकाल पूरा किया।

- **परमाणु उपलब्धि:** भारत को पूर्ण विकसित परमाणु शक्ति घोषित करने का नेतृत्व किया।
 - ▲ वे पहले भारतीय नेता थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा को हिंदी में संबोधित किया।
- **पुरस्कार:** उन्हें 1992 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया और 2015 में भारत रत्न प्रदान किया गया।

Source: PIB

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) के 100 वर्ष

समाचारों में

- भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने 100 वर्ष पूरे किए, जो भारत के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है।

यूरोपीय पृष्ठभूमि

- यूरोप राजतंत्रवादियों (दक्षिणपंथ) और गणतंत्रवादियों (वामपंथ) में विभाजित था, जिससे फ्रांसीसी क्रांति एवं नेपोलियन युद्धों के बाद दक्षिणपंथ-वामपंथ राजनीतिक द्वंद्व उत्पन्न हुआ।
 - ▲ औद्योगिक पूँजीवाद ने संपत्ति तो बनाई, लेकिन गहरी सामाजिक असमानताएँ भी पैदा कीं।
- कार्ल मार्क्स और साम्यवादी विचारधारा: कार्ल मार्क्स ने पूँजीवाद की आंतरिक विरोधाभासों के कारण पूँजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण की परिकल्पना की।
 - ▲ उन्होंने अपेक्षा की थी कि समाजवादी क्रांतियाँ पश्चिमी यूरोप के उन्नत पूँजीवादी देशों में शुरू होंगी।

रूसी क्रांति और वैश्विक प्रभाव

- मार्क्स की अपेक्षा के विपरीत, प्रथम सफल समाजवादी क्रांति 1917 में रूस में हुई।
- बोल्शेविक क्रांति ने राजतंत्र, पूँजीवाद और साम्राज्यवाद का विरोध किया।
- इसने उपनिवेशित गैर-यूरोपीय देशों में साम्यवादी दलों और साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलनों को प्रेरित किया, जिनमें भारत भी शामिल था।

भारतीय साम्यवाद पर प्रभाव

- भारतीय साम्यवादी आंदोलन ने रूसी क्रांति और लेनिन से गहरी प्रेरणा ली।
- सीपीआई के गठन की ओर ले जाने वाले तीन राजनीतिक धारा
 - ▲ प्रवासी क्रांतिकारी: एम. एन. रॉय और अन्य, जो अमेरिका, मेक्सिको, यूरोप, सोवियत संघ, काबुल और बर्लिन में सक्रिय थे; कम्युनिस्ट इंटरनेशनल (कोमिन्टर्न) से जुड़े हुए।
 - ▲ भारतीय वामपंथी समूह: लाहौर, बॉम्बे, कलकत्ता और मद्रास में स्थानीय साम्यवादी समूह, जो भारत में समन्वय चाहते थे।
 - ▲ श्रमिक संगठनों का विकास: विशेष रूप से 1920 में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) का गठन।

ताशकंद बैठक (1920)

- भारतीय क्रांतिकारियों ने कोमिन्टर्न की स्वीकृति से ताशकंद में एक कम्युनिस्ट पार्टी बनाई।
- इसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकना और समाजवाद स्थापित करना था।
- इसमें भारत-आधारित क्रांतिकारी समूहों और जन समर्थन की कमी थी।

कानपुर सम्मेलन (1925)

- भारतीय साम्यवादी समूहों ने कानपुर में एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया और औपचारिक रूप से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (CPI) की स्थापना का संकल्प लिया।
- इसने ब्रिटिश शासन समाप्त करने और मजदूरों व किसानों का गणराज्य बनाने का लक्ष्य घोषित किया।
- यह सम्मेलन एक राजनीतिक रूप से प्रतीकात्मक स्थान पर हुआ, जहाँ श्रमिक उपस्थिति और पहले के बोल्शेविक षड्यंत्र मामले थे।

सीपीआई की स्थापना पर परिचय

- सीपीआई (मार्क्सवादी) ताशकंद (1920) को संस्थापक क्षण मानता है क्योंकि इसे कोमिन्टर्न की स्वीकृति मिली थी।

- सीपीआई कानपुर (1925) को वास्तविक स्थापना मानता है, जो भारतीय पहल और जन राजनीति पर बल देता है।
 - ▲ ताशकंद “साम्यवादी” पहलू का प्रतिनिधित्व करता है; कानपुर “भारतीय” पहलू का।

साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में भूमिका

- साम्यवादियों ने भारत की स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया, सिवाय 1942–45 के दौरान जब विरोधी-फासीवादी युद्ध प्रयास प्राथमिकता थे।
- उन्हें षड्यंत्र मामलों, प्रतिबंधों और कारावास के माध्यम से दमन का सामना करना पड़ा।

कांग्रेस के साथ संबंध

- साम्यवादियों ने परिचर्चा की कि कांग्रेस को अंदर से परिवर्तित किया जाए या एक स्वतंत्र राजनीतिक विकल्प बनाया जाए।
- यह दुविधा पूरे स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान बनी रही।

जन आंदोलनों और संयुक्त मोर्चे

- मजदूरों और किसानों के संघर्षों का नेतृत्व किया तथा मजदूर-किसान पार्टियाँ बनाईं।
- 1930 के दशक में कांग्रेस समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन किया, हालांकि 1939 तक यह गठबंधन टूट गया।

1945 के बाद और किसान संघर्ष

- इसने प्रमुख किसान आंदोलनों का नेतृत्व किया जैसे तेभागा (बंगाल) और तेलंगाना (हैदराबाद)।
- इसने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ जन प्रतिरोध का समर्थन किया।
- साम्यवादी आंदोलन सशस्त्र क्रांतिकारी मार्ग और संसदीय लोकतंत्र के बीच विभाजित हो गया।
- इसने केरल, पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा जैसे राज्यों में चुनावी सफलता हासिल की।

आलोचना और सतत प्रासंगिकता

- साम्यवाद को अधिनायकवाद, भ्रष्टाचार और घटती प्रासंगिकता के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा है।

- सीमाओं के बावजूद, यह गहरी वैश्विक असमानताओं वाली विश्व में वंचितों के पक्ष में खड़ा रहता है।

Source :IE

भारत की क्रिएटर इकॉनमी 2030 तक उपभोक्ता व्यय को 1 ट्रिलियन डॉलर से अधिक तक पहुँचाने के लिए तैयार है: रिपोर्ट संदर्भ

- बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप (BCG) की रिपोर्ट के अनुसार, भारत की तीव्रता से बढ़ती क्रिएटर इकॉनमी 2030 तक वार्षिक उपभोक्ता व्यय को एक ट्रिलियन डॉलर से अधिक प्रभावित करने की संभावना है।

मुख्य बिंदु

- भारत में वर्तमान में लगभग 20 से 25 लाख मुद्रीकृत डिजिटल क्रिएटर्स हैं, जो उपभोक्ता खरीद निर्णयों के 30% से अधिक को प्रभावित करते हैं।
- वर्तमान में, क्रिएटर-नेतृत्व वाला प्रभाव पहले से ही अनुमानित 350 से 400 बिलियन डॉलर के वार्षिक उपभोक्ता व्यय को आकार दे रहा है, और यह आंकड़ा आगामी पाँच वर्षों में तीव्रता से बढ़ने की संभावना है।
 - ▲ क्रिएटर-प्रभावित व्यय 2030 तक \$1 ट्रिलियन+ तक पहुँचने की संभावना है, जिससे \$100 बिलियन+ का इकोसिस्टम राजस्व खुलेगा।
- क्रिएटर-नेतृत्व वाला वाणिज्य भारतीय उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की खोज, मूल्यांकन और खरीद का केंद्रीय साधन बन गया है।
 - ▲ यह बदलाव फैशन और ब्यूटी से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स एवं दैनिक उपयोग की आवश्यकताओं तक की श्रेणियों में फैला हुआ है।
 - ▲ यह प्रवृत्ति पारंपरिक ऊपर-से-नीचे विज्ञापन से हटकर विश्वास-आधारित, समुदाय-चालित उत्पाद खोज की ओर संकेत करती है।
- रिपोर्ट के अनुसार, वे कंपनियाँ जो क्रिएटर्स और डिजिटल वाणिज्य प्लेटफॉर्म को अपनी मुख्य मार्केटिंग, बिक्री एवं मूल्य निर्धारण रणनीतियों में शामिल करेंगी, वे भारत की डिजिटल-नेतृत्व वाली वृद्धि के आगामी चरण का लाभ उठाने के लिए सबसे अच्छी स्थिति में होंगी।

क्रिएटर इकॉनमी

- क्रिएटर इकॉनमी उस इकोसिस्टम को संदर्भित करती है जहाँ व्यक्ति (कंटेंट क्रिएटर्स) डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करके सामग्री, कौशल या प्रभाव का निर्माण, वितरण और मुद्रीकरण सीधे दर्शकों तक करते हैं, अक्सर पारंपरिक मध्यस्थों के बिना।
- क्रिएटर इकॉनमी के प्रमुख घटक :**
 - क्रिएटर्स:** यूट्यूबर्स, पॉडकास्टर्स, ब्लॉगर्स, इन्फ्लुएंसर्स, शिक्षक, गेमर्स, कलाकार।
 - प्लेटफॉर्म्स:** यूट्यूब, इंस्टाग्राम, X आदि।
 - मुद्रीकरण उपकरण:** विज्ञापन, ब्रांड प्रायोजन, सदस्यता, टिप्स, NFT, मर्चेंडाइज़े।
 - दर्शक/समुदाय:** अनुयायी, सब्सक्राइबर, विशेष समुदाय।
 - सक्षमकर्ता:** पेमेंट गेटवे, एनालिटिक्स टूल्स, एआई टूल्स, क्रिएटर मैनेजमेंट एजेंसियाँ।

क्रिएटर इकॉनमी का महत्व

- रोजगार सृजन और स्वरोजगार:** बड़े पैमाने पर स्वरोजगार के अवसर सृजित करता है, विशेषकर युवाओं, महिलाओं एवं गिर्ग वर्कर्स के लिए, जिससे पारंपरिक रोजगारों पर निर्भरता कम होती है।
- उद्यमिता का लोकतंत्रीकरण:** कम प्रवेश बाधाएँ उन व्यक्तियों को सक्षम बनाती हैं जिनके पास कौशल या रचनात्मकता है—पूँजी नहीं—वे सूक्ष्म उद्यमी बन सकते हैं और सीधे दर्शकों से कमा सकते हैं।
- डिजिटल अर्थव्यवस्था को बढ़ावा:** फिनटेक, डिजिटल भुगतान, क्लाउड सेवाएँ, एआई टूल्स, मार्केटिंग और ई-कॉमर्स जैसे संबद्ध क्षेत्रों में वृद्धि को प्रेरित करता है।
- सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व और सॉफ्ट पावर:** क्षेत्रीय भाषाओं, स्थानीय कला रूपों और स्वदेशी ज्ञान को बढ़ावा देता है, जिससे भारत की सांस्कृतिक कूटनीति वैश्विक स्तर पर बेहतर होती है।
- समावेशी विकास:** टियर-2, टियर-3 शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों से भागीदारी को सक्षम करता है, जिससे

क्षेत्रीय एवं लैंगिक आय अंतराल को कम करने में सहायता मिलती है।

Source: LM

“प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY): 25वीं वर्षगांठ का उत्सव

समाचारों में

- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) की 25वीं वर्षगांठ हाल ही में मनाई गई।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना

- इसे वर्ष 2000 में शुरू किया गया था ताकि पात्र, पहले से असंबद्ध ग्रामीण बस्तियों को प्रत्येक मौसम में सड़क संपर्क प्रदान किया जा सके।
- इसने गाँवों को बाजारों, शैक्षणिक संस्थानों और स्वास्थ्य सुविधाओं से जोड़कर सार्वभौमिक ग्रामीण पहुँच की नींव रखी।
- यह कृषि वृद्धि, रोजगार सृजन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच तथा गरीबी उन्मूलन का एक प्रमुख साधन बनकर उभरी है।

उद्देश्य

- जनसंख्या मानदंडों वाली बस्तियों तक प्रत्येक मौसम में पहुँच सुनिश्चित करना।
- स्कूलों, स्वास्थ्य सेवाओं और बाजारों तक पहुँच को सुगम बनाना।
- निर्माण और रखरखाव के माध्यम से ग्रामीण रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करना।
- अलगाव को कम करना और आय के अवसरों में सुधार करना।

चरण

- चरण I:** देशभर में कुल 1,63,339 ग्रामीण बस्तियों के लिए सड़क संपर्क परियोजनाएँ स्वीकृत की गईं।
- चरण II (2013):** 2013 में शुरू किया गया, जिसका ध्यान वर्तमान ग्रामीण सड़क नेटवर्क को बेहतर और सुदृढ़ करने पर था।

- इसमें ग्रामीण बाजारों, विकास केंद्रों एवं सेवा केंद्रों को जोड़ने वाले आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मार्गों के उन्नयन को प्राथमिकता दी गई, ताकि परिवहन दक्षता में सुधार हो और ग्रामीण आर्थिक विकास तीव्र हो।
- 2016 में शुरू:** वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र (RCPLWEA) के लिए सड़क संपर्क परियोजना एक लक्षित हस्तक्षेप थी, जो नौ राज्यों — आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, ओडिशा, तेलंगाना और उत्तर प्रदेश — के 44 सबसे गंभीर रूप से प्रभावित जिलों एवं आसपास के क्षेत्रों को कवर करती है।
- चरण III (2019):** 1,25,000 किमी शूरू रूट्स और प्रमुख ग्रामीण लिंक को उन्नत करने पर केंद्रित, ताकि ग्रामीण बस्तियों तथा प्रमुख सामाजिक-आर्थिक संस्थानों जैसे ग्रामीण कृषि बाजार (GrAMs), उच्च माध्यमिक विद्यालयों एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के बीच संपर्क सुदृढ़ हो सके।
- चरण IV (2024):** जनगणना 2011 की जनसंख्या मानदंडों के आधार पर 25,000 असंबद्ध ग्रामीण बस्तियों को प्रत्येक मौसम में सड़क संपर्क प्रदान करने का लक्ष्य।

कदम

- सरकार ने उन्नत तकनीकों, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सुदृढ़ गुणवत्ता मानकों के व्यापक उपयोग के माध्यम से PMGSY के अंतर्गत ग्रामीण सड़क विकास को सुदृढ़ किया है, ताकि टिकाऊपन, पारदर्शिता और स्थिरता सुनिश्चित हो सके।
- ऑनलाइन प्रबंधन, निगरानी और लेखा प्रणाली (OMMAS) के माध्यम से भौतिक एवं वित्तीय प्रगति की वास्तविक समय निगरानी की जाती है, जो परियोजना प्रबंधन, जियो-टैग गुणवत्ता निरीक्षण तथा राज्य एवं राष्ट्रीय गुणवत्ता मॉनिटरों द्वारा स्वतंत्र मूल्यांकन को एकीकृत करती है।
- सड़क रखरखाव को ई-MARG प्लेटफॉर्म के माध्यम से व्यवस्थित रूप से ट्रैक किया जाता है, जो दोष दायित्व

- अवधि के दौरान ठेकेदार भुगतान को वास्तविक सड़क प्रदर्शन और गुणवत्ता परिणामों से जोड़ता है।
- PMGSY-III कार्यों में मशीनरी तैनाती की निगरानी हेतु GPS-सक्षम वाहन ट्रैकिंग सिस्टम के अनिवार्य उपयोग से पारदर्शिता और बढ़ी है।

उपलब्धियाँ

- PMGSY सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का एक प्रमुख चालक बन गई है, जिसने बाजार एकीकरण को सुदृढ़ किया, किसानों के लिए बेहतर मूल्य प्राप्ति को सुगम बनाया और कृषि एवं गैर-कृषि आजीविकाओं दोनों का समर्थन किया।
- इस कार्यक्रम ने ग्रामीण संपर्क, बाजार पहुँच, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और समावेशी आर्थिक वृद्धि में उल्लेखनीय सुधार किया है।
- यह सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के अनुरूप है और पारदर्शिता, स्थिरता, गरीबी उन्मूलन एवं व्यापक ग्रामीण परिवर्तन को बढ़ावा देने हेतु बुनियादी ढाँचे से आगे जाता है।

चुनौतियाँ

- बजट सीमाओं के बीच सड़कों का दीर्घकालिक रखरखाव सुनिश्चित करना।
- बाढ़, भूस्खलन और चरम मौसम घटनाओं के प्रति सड़कों की संवेदनशीलता।
- दूरस्थ आदिवासी, रेगिस्तानी और पहाड़ी क्षेत्रों में अब भी संपर्क की कमी।
- निर्माण सामग्री और भूमि अधिग्रहण की बढ़ती लागत।

निष्कर्ष और आगे की राह

- जैसे ही PMGSY 2025 में 25 वर्ष पूरे करती है, यह भारत के ग्रामीण विकास की आधारशिला के रूप में खड़ी है, जिसमें लगभग 95% स्वीकृत ग्रामीण सड़कें पूरी हो चुकी हैं।
- अगले चरण में स्थिरता, जलवायु अनुकूलन और समावेशी क्वरेज को प्राथमिकता देनी होगी ताकि ग्रामीण संपर्क भारत की विकास गाथा को आगे बढ़ाता रहे।

- रखरखाव को सुदृढ़ करना, तकनीक का लाभ उठाना और पिछड़े क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना PMGSY को भविष्य-उन्मुख बनाने की कुंजी होगी।

Source : PIB

भारत का विनिर्माण क्षेत्र

संदर्भ

- भारत का विनिर्माण क्षेत्र अपनी क्षमता की तुलना में लंबे समय से कम प्रदर्शन करता रहा है, जो संरचनात्मक अक्षमताओं, नीतिगत गलतियों और कई नीतिगत प्रयासों के बावजूद सेवाओं की ओर समय से पहले छलांग लगाने से बाधित रहा है।

पृष्ठभूमि: भारत का विनिर्माण क्षेत्र

- यह स्वतंत्रता के पश्चात के मामूली आधार से विकसित होकर आर्थिक विकास का एक रणनीतिक संतंभ बन गया।
- स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने सार्वजनिक क्षेत्र-नेतृत्व वाली औद्योगिकीकरण पर बल देते हुए मिश्रित अर्थव्यवस्था मॉडल अपनाया।
- द्वितीय पंचवर्षीय योजना (1956–61) ने भारी उद्योगों, इस्पात संयंत्रों और सार्वजनिक उद्यमों की नींव रखी।
- 1990 के दशक तक इसने GDP में लगभग 15–17% का योगदान दिया।
- चीन और दक्षिण कोरिया जैसी समान आर्थिक स्थितियों से शुरू होने के बावजूद भारत का विनिर्माण क्षेत्र पिछड़ गया।

वर्तमान स्थिति

- भारत की GDP में विनिर्माण का योगदान हाल के दशकों में लगभग 13–17% के बीच रहा है, जबकि चीन में लगभग 25–29%, दक्षिण कोरिया में लगभग 27% और वियतनाम में लगभग 24–25% है।
- रोजगार में, भारत के 45% से अधिक कार्यबल अब भी कृषि में है, जबकि केवल लगभग 11.4% विनिर्माण में और लगभग 29% सेवाओं में कार्यरत हैं।

- विनिर्माण रोजगार का बड़ा हिस्सा अनौपचारिक है, जिससे औपचारिक प्रशिक्षण, तकनीकी अपनाने, गुणवत्ता उन्नयन और स्थिर औद्योगिक संबंध बाधित होते हैं।

भारत में विनिर्माण क्यों पिछड़ा?

- कम उत्पादकता और विखंडित उद्योग:** अधिकांश भारतीय निर्माता छोटे पैमाने की इकाइयाँ हैं जिनमें सीमित स्वचालन और कमजोर पैमाने की अर्थव्यवस्था है।
 - CMIE डेटा के अनुसार, भारतीय विनिर्माण में प्रति श्रमिक औसत उत्पादकता चीन की तुलना में 20% से भी कम है।
- बुनियादी ढाँचे की कमी:** लॉजिस्टिक्स, विद्युत की विश्वसनीयता और बंदरगाह संपर्क में लगातार समस्याएँ, जो उत्पाद मूल्य का 14–18% तक लागत बढ़ाती हैं (पूर्वी एशिया में 8% की तुलना में)।
- नीतिगत अस्थिरता और जटिलता:** बार-बार नीतिगत उलटफेर, केंद्र और राज्यों से ओवरलैपिंग अनुपालन, विशेषकर आयात शुल्क एवं PLI दिशानिर्देशों के आसपास।
- कमजोर घरेलू आपूर्ति श्रृंखला:** भारत मध्यवर्ती वस्तुओं का बड़ा हिस्सा आयात करता है, जिससे स्वदेशी आपूर्ति श्रृंखलाओं की वृद्धि बाधित होती है।
- कौशल अंतराल:** भारत के केवल लगभग 5% कार्यबल को औपचारिक रूप से प्रशिक्षित किया गया है, जबकि चीन में 24% और अमेरिका में 52%।
- भूमि और श्रम बाजार की कठोरता:** भूमि अधिग्रहण महंगा और समय लेने वाला है। भारत में औद्योगिक संयंत्र स्थापित करने में 3–5 वर्ष लगते हैं, जबकि वियतनाम में केवल 18 महीने।
- कमजोर R&D और नवाचार संस्कृति:** भारत में विनिर्माण R&D GDP का 0.7% से भी कम है, जबकि चीन में 2.1%। भारतीय कंपनियाँ अक्सर ‘असेंबल’ करती हैं, ‘नवाचार’ नहीं।
- घरेलू माँग की कमी:** आय असमानता बुनियादी उत्पादों से परे विनिर्मित वस्तुओं की घरेलू माँग को सीमित करती है।

- सेवाओं की ओर नीतिगत झुकाव: सरकारी प्रोत्साहन, शिक्षा और बुनियादी ढाँचा ऐतिहासिक रूप से IT एवं सेवाओं को प्राथमिकता देते रहे हैं।
 - ▲ परिणामस्वरूप, भारत ने 'औद्योगिकीकरण को छोड़ा', कृषि से सीधे सेवाओं की ओर छलांग लगाई।

क्या भारत डच डिज़ीज़ जैसा है?

- डच डिज़ीज़ बताती है कि कैसे एक क्षेत्र (प्रायः संसाधन-आधारित) का उभार अन्य क्षेत्रों, विशेषकर विनिर्माण जैसे व्यापार योग्य क्षेत्रों को बाहर कर देता है।
 - ▲ वेतन प्रभाव: श्रम उभरते क्षेत्र की ओर खिंचता है, जिससे समग्र वेतन बढ़ता है।
 - ▲ विनिमय दर प्रभाव: बढ़ते निर्यात वास्तविक विनिमय दर को बढ़ाते हैं, जिससे अन्य निर्यात कम प्रतिस्पर्धी हो जाते हैं।
- भारत में, सार्वजनिक क्षेत्र में उच्च सरकारी वेतन 'उभरते क्षेत्र' की तरह कार्य करता रहा, जिसने श्रम को विनिर्माण से दूर खींचा और पूरे अर्थव्यवस्था में वेतन बढ़ा दिया।
- इसके तीन प्रमुख परिणाम हुए:
 - ▲ विनिर्माण प्रतिस्पर्धा खो बैठा क्योंकि कंपनियाँ सरकारी वेतनमान से मेल नहीं खा सकीं।
 - ▲ घरेलू कीमतें बढ़ीं, जिससे आयात सस्ता और घरेलू वस्तुएँ अपेक्षाकृत महँगी हो गईं।
 - ▲ वास्तविक विनिमय दर में वृद्धि हुई, भले ही नाममात्र मुद्रा मूल्य में बदलाव न हुआ हो, जिससे निर्यात और प्रभावित हुआ।
- निष्कर्षतः: भारत ने नीतिगत रूप से प्रेरित डच डिज़ीज़ का अनुभव किया, जहाँ उच्च वेतन वाले सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार ने औद्योगिक वृद्धि के विरुद्ध प्रोत्साहनों को विकृत कर दिया।

विकास को बढ़ावा देने वाले नीतिगत सुधार

- **PLI योजनाएँ:** 14 प्रमुख क्षेत्रों को लक्षित करते हुए, जिनमें इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल और फार्मास्यूटिकल्स शामिल हैं, घरेलू उत्पादन बढ़ाने, FDI आकर्षित करने एवं रोजगार सृजन का लक्ष्य।

- **PM MITRA पार्कर्स:** ये एकीकृत वस्त्र पार्क हैं, जो वस्त्र मूल्य शृंखला में पैमाने और दक्षता को बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।
- **राष्ट्रीय विनिर्माण मिशन:** केंद्रीय बजट 2025–26 में घोषित, यह एक दीर्घकालिक रणनीतिक रोडमैप है जो नीति, क्रियान्वयन और शासन को एकीकृत दृष्टि में जोड़ता है।
 - ▲ यह सौर PV मॉड्यूल, EV बैटरियों, ग्रीन हाइड्रोजन एवं पवन टर्बाइंनों से स्वच्छ-तकनीक विनिर्माण को प्राथमिकता देता है।



औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण

- **स्किल इंडिया मिशन:** युवाओं को उद्योग-संबंधित कौशल में प्रशिक्षित करता है, विशेषकर AI, रोबोटिक्स और एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग जैसी इंडस्ट्री 4.0 तकनीकों में।
- **गति शक्ति मास्टर प्लान:** परिवहन और लॉजिस्टिक्स बुनियादी ढाँचे को एकीकृत करता है ताकि लागत कम हो तथा आपूर्ति शृंखला दक्षता बढ़े।
- **डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया:** नवाचार और MSME भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं।
 - ▲ ये प्रयास औद्योगिक क्लस्टर बनाने का लक्ष्य रखते हैं, जो तमिलनाडु (ऑटोमोबाइल), गुजरात (रसायन) और कर्नाटक (इलेक्ट्रॉनिक्स) जैसे सफल हब का अनुकरण करते हैं।

आगे की राह: वैश्विक विनिर्माण नेतृत्व की ओर

- भारत की दृष्टि 2047 तक एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनने की है। नीति आयोग की रोडमैप टू ग्लोबल

लीडरशिप इन एडवांस्ड मैन्युफैक्चरिंग प्रमुख रणनीतियाँ बताती हैं:

- ▲ **डिजिटल परिवर्तन:** उत्पादन को आधुनिक बनाने के लिए AI, IoT और रोबोटिक्स जैसी इंडस्ट्री 4.0 तकनीकों को अपनाना।
- ▲ **ग्रीन मैन्युफैक्चरिंग:** पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए स्थिरता और परिपत्र अर्थव्यवस्था सिद्धांतों को एकीकृत करना।
- ▲ **क्लस्टर विकास:** तमिलनाडु, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र बनाना।
- ▲ **R&D निवेश:** उत्पाद नवाचार और गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक-निजी सहयोग बढ़ाना।
- लक्ष्य है GDP में विनिर्माण का हिस्सा 25% तक बढ़ाना और 100 मिलियन रोजगार सृजित करना (राष्ट्रीय विनिर्माण नीति), जिससे भारत एक लचीली और समावेशी औद्योगिक अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित हो सके।

Source: TH

आठवीं अनुसूची

- भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में भारत गणराज्य की राजकीय भाषाओं की सूची दी गई है।
- भारतीय संविधान का भाग XVII अनुच्छेद 343 से 351 तक राजकीय भाषाओं से संबंधित है।
- आठवीं अनुसूची में निम्नलिखित 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है:
 - ▲ असमिया, बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उडिया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी।
 - ▲ इनमें से 14 भाषाएँ प्रारंभ में संविधान में शामिल थीं। बाद में 1967 में सिंधी जोड़ी गई; 1992 में कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली जोड़ी गई; और 2003 में 92वें संशोधन अधिनियम द्वारा बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली जोड़ी गईं।
 - अंग्रेजी इन 22 भाषाओं की सूची में अनुपस्थित है। यह भारत की 99 गैर-अनुसूचित भाषाओं में से एक है।

स्रोत: TH

धनु यात्रा

समाचारों में

- हाल ही में ओडिशा के बरगढ़ में ‘धनु यात्रा’ का उद्घाटन किया गया।

धनु यात्रा

- यह विश्व का सबसे बड़ा खुले मैदान का रंगमंच (open-air theatre) है और ओडिशा तथा अन्य स्थानों से हजारों आगंतुकों को आकर्षित करता है।
- यह ग्यारह दिवसीय वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव है, जो पौराणिक कथाओं, परंपरा और प्रदर्शन को एक अद्वितीय उत्सव में एक साथ लाता है।
- यह पूरे नगर को पौराणिक मथुरा नगरी में परिवर्तित कर देता है और भगवान् कृष्ण के जीवन की घटनाओं का नाट्य रूपांतरण करता है — उनके जन्म से लेकर राजा कंस की मृत्यु तक।

संक्षिप्त समाचार

भारतीय संविधान संथाली भाषा में जारी

संदर्भ

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भारतीय संविधान को संथाली भाषा में जारी किया।

परिचय

- भारतीय संविधान अब संथाली भाषा में उपलब्ध है, जिसे ओल चिकी लिपि में लिखा गया है।
- संथाली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में 92वें संशोधन अधिनियम, 2003 के माध्यम से शामिल किया गया था।
- यह भाषा झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और बिहार के एक बड़े आदिवासी समुदाय द्वारा बोली जाती है।

- केंद्र सरकार ने ‘धनु यात्रा’ को राष्ट्रीय उत्सव का दर्जा दिया है।

स्रोत: Air

राष्ट्रीय खुफिया ग्रिड (NATGRID) को राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (NPR) से जोड़ा गया

संदर्भ

- राष्ट्रीय खुफिया ग्रिड (NATGRID) को राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (NPR) से जोड़ा गया है, जिसका उद्देश्य खुफिया जानकारी को सुदृढ़ करना और आपराधिक जांच को तीव्र करना है।

राष्ट्रीय खुफिया ग्रिड (NATGRID) क्या है?

- NATGRID एक वास्तविक समय खुफिया और डेटा-एक्सेस प्लेटफॉर्म है, जिसे 26/11 मुंबई हमलों (2008) के बाद विकसित किया गया था ताकि एजेंसियों के बीच निर्बाध सूचना-साझाकरण सक्षम हो सके।
- यह गृह मंत्रालय (MHA) के अंतर्गत कार्य करता है तथा बैंक लेन-देन, दूरसंचार उपयोग, पासपोर्ट/आत्रजन रिकॉर्ड, टैक्स आईडी, पुलिस FIR (CCTNS) एवं अन्य ई-गवर्नेंस स्रोतों जैसे 20 से अधिक श्रेणियों के नागरिक और वाणिज्यिक डेटा को एकीकृत करता है।
- डेटा पहुँच:** प्रारंभ में केवल इन एजेंसियों तक सीमित था:
 - खुफिया ब्यूरो (IB), अनुसंधान एवं विश्लेषण विंग (R&AW), राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA)
 - प्रवर्तन निदेशालय (ED), वित्तीय खुफिया इकाई (FIU), नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (NCB) और राजस्व खुफिया निदेशालय (DRI) आदि।
- अब NATGRID तक पहुँच पुलिस अधीक्षक (SP) स्तर के अधिकारियों को भी उपलब्ध है।

गांडीव: NATGRID की विश्लेषणात्मक रीढ़

- ‘गांडीव’ NATGRID प्लेटफॉर्म पर तैनात एक उन्नत विश्लेषणात्मक उपकरण है।
- यह बहु-स्रोत डेटा संग्रह, चेहरे की पहचान और इकाई समाधान का समर्थन करता है।

- यदि किसी संदिग्ध की छवि उपलब्ध है, तो गांडीव उसे दूरसंचार KYC डेटाबेस, ड्राइविंग लाइसेंस, वाहन पंजीकरण रिकॉर्ड और अन्य फोटो पहचान दस्तावेजों से मिलान कर सकता है।

NATGRID को NPR से जोड़ने का महत्व

- यह एकीकरण एजेंसियों को संदिग्धों या रुचि के व्यक्तियों की सत्यापित परिवार-आधारित जनसांख्यिकीय जानकारी तक पहुँचने की अनुमति देता है।
- गांडीव के माध्यम से NPR डेटा तक पहुँच संदिग्ध से जुड़े सभी परिवार सदस्यों का विवरण प्राप्त करने की सुविधा देता है।
- पारिवारिक लिंक नेटवर्क विश्लेषण को सक्षम बनाता है, जिससे जांचकर्ताओं को सहयोगियों, सुरक्षित ठिकानों और आवाजाही पैटर्न की पहचान करने में सहायता मिलती है।

राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (NPR)

- NPR भारत के सामान्य निवासियों का एक व्यापक डेटाबेस है, जिसे परिवार-वार आधार पर बनाए रखा जाता है।
- इसे सर्वप्रथम 2010 में एकत्र किया गया और 2015 में घर-घर जाकर अद्यतन किया गया, जिसमें 119 करोड़ निवासियों का डेटाबेस है।
- नागरिकता अधिनियम के अनुसार, NPR राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) बनाने का प्रथम कदम है।

Source: TH

रेबीज

संदर्भ

- भारत विश्व में होने वाली 59,000 वार्षिक रेबीज मृत्युओं का लगभग एक-तिहाई हिस्सा है, यानी लगभग 20,000 मामले, जो किसी भी देश में सबसे अधिक हैं।

परिचय

- रेबीज एशिया और अफ्रीका सहित 150 से अधिक देशों और क्षेत्रों में एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या है।

- यह एक विषाणुजनित, जूनोटिक, उपेक्षित उष्णकटिबंधीय रोग है जो केंद्रीय तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करता है।
- इसका कारण रेबीज़ वायरस है (वंश लिसावायरस, परिवार रैबडोविरिडे)।
- संक्रमण:** मानव रेबीज़ मामलों में लगभग 99% मामलों में वायरस का प्रसार कुत्तों द्वारा होता है।
 - रेबीज़ मनुष्यों और जानवरों में लार के माध्यम से फैलता है, सामान्यतः काटने, खरोंच या श्लेष्मा (जैसे आँखें, मुँह या खुले घाव) के सीधे संपर्क से।
- घातकता:** एक बार नैदानिक लक्षण प्रकट होने पर, रेबीज़ लगभग 100% घातक होता है।
- लक्षण शुरू होने के बाद इसका कोई इलाज नहीं है।
- भारत में, कुत्ता-जनित रेबीज़ उन्मूलन हेतु राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPRE) का लक्ष्य 2030 तक मानव मृत्युओं को शून्य करना है।

स्रोत: TH

भारत के घरेलू विमानन बाज़ार में नए प्रवेशकर्ता

संदर्भ

- नागरिक उड़ान मंत्रालय ने दो नई एयरलाइनों — अल हिंद एयर और फ्लाईएक्सप्रेस — को अनापत्ति प्रमाणपत्र (NOC) प्रदान किया है, जिससे इनके आगामी वर्ष लॉन्च का मार्ग प्रशस्त हुआ है।
 - 2026 में, इन दो वाहकों के अतिरिक्त, उत्तर प्रदेश-आधारित शंख एयर, जिसे पहले ही NOC मिल चुका है, संचालन शुरू करने की संभावना है।

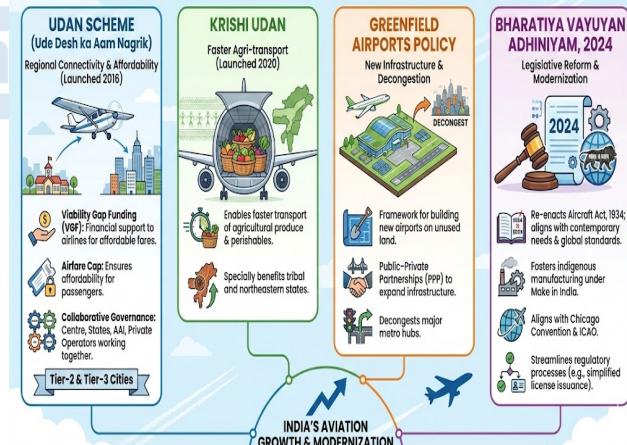
भारत का विमानन उद्योग परिवर्त्य

- भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा घरेलू विमानन बाज़ार बनकर उभरा है।
- वर्तमान में भारत में नौ निर्धारित घरेलू एयरलाइंस संचालन में हैं।
- इंडिगो और एयर इंडिया समूह (एयर इंडिया और एयर इंडिया एक्सप्रेस) मिलकर घरेलू बाज़ार का 90% से अधिक हिस्सा रखते हैं।

- अकेले इंडिगो के पास 65% से अधिक बाज़ार हिस्सेदारी है, जिससे एक डी फैक्टो डुओपॉली को लेकर चिंताएँ बढ़ रही हैं।
- अन्य निर्धारित वाहकों में आकासा एयर, स्पाइसजेट, स्टार एयर, फ्लाई91, और इंडियावन एयर शामिल हैं।
- प्रणालीगत चिंताएँ:** हाल ही में लगभग 4,500 उड़ानें रद्द होने पर इंडिगो के प्रभुत्व को उजागर किया गया।
 - इससे प्रणालीगत जोखिमों और सीमित लचीलापन को लेकर चिंताओं में वृद्धि हुई, जो भारत के घरेलू विमानन बाज़ार में एकल वाहक पर भारी निर्भरता से उत्पन्न होती है।



KEY SCHEMES IN AVIATION SECTOR



स्रोत: TH

'समुद्र प्रताप'

समाचारों में

- भारतीय तटरक्षक बल (ICG) ने गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (GSL) की 02 PCV परियोजना के अंतर्गत प्रथम अंतर्राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण पोत (PCV) समुद्र प्रताप (यार्ड 1267) को शामिल किया।

'समुद्र प्रताप'

- यह भारतीय तटरक्षक बल का प्रथम स्वदेशी रूप से डिज़ाइन और निर्मित प्रदूषण नियंत्रण पोत है।
- यह ICG बेड़े का सबसे बड़ा जहाज है, जो तटरक्षक बल की परिचालन पहुँच और क्षमता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाता है।
- इसमें अत्याधुनिक तकनीक लगी है, जिसमें 30 मिमी CRN-91 गन, दो 12.7 मिमी स्थिर रिमोट-नियंत्रित गन एकीकृत फायर कंट्रोल सिस्टम के साथ, स्वदेशी रूप



- से विकसित इंटीग्रेटेड ब्रिज सिस्टम, इंटीग्रेटेड प्लेटफॉर्म मैनेजमेंट सिस्टम, ऑटोमेटेड पावर मैनेजमेंट सिस्टम और उच्च क्षमता वाली बाहरी अग्निशमन प्रणाली शामिल हैं।
- 60% से अधिक स्वदेशी सामग्री के साथ, इस जहाज का समावेश सरकार की आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया पहलों की दृष्टि को सुदृढ़ करता है।

Source :PIB

